

च

1. च *enklit.* Part. Çant. 1, 22. Die Personalpronomina erscheinen in den volleren, betonten Formen nach P. 8, 1, 24. Vop. 3, 143. ग्रामस्तव च स्वं मम च स्वम् P., Sch. तुभ्यं मङ्गं च दद्यात्स्वम् Vop. 1) *und, auch, te, que;* einzelne Theile des Satzes oder ganze Sätze aneinanderreihend. Scheint ursprünglich beiden zu verbindenden Wörtern und Satzgliedern nachgestellt worden zu sein und im RV. ist das doppelt gesetzte च noch häufiger als das einfache. a) च — च, — *und, sowohl — als auch:* अहं च त्वं च RV. 8, 51, 11. मित्रशोभा वरुणश्च 5, 68, 2. अग्नी च पे मघवतो वयं च 1, 141, 13. 2, 1, 16. आ च परा च 1, 164, 31. 10, 4, 96, 7. 7, 4, 5. 22, 9. दश चाष्टौ च *achtzehn* M. 1, 64. R. 1, 5, 7. असपिण्डा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः M. 3, 5. आच्छाद्य चार्चयित्वा च 27. संजीवयति चाजलं प्रमापयति चाव्ययः 1, 57. N. 3, 21. 8, 9. Çak. 58. Hit. I, 11. 112. 164. Ragh. 1, 16. 68. वा च ते तत्रियवत्तं वा च ब्रह्मवत्तं मरुत् R. 1, 56, 4. 3, 13, 24. Çak. 10. पूर्वह्नि च परह्नि च तलं यस्य न मुञ्चति *weder — noch* Cit. beim Sch. zu Çak. 86. न (अग्नीयात्) ग्रामजातान्यर्तो ऽपि मूलानि च फलानि च M. 6, 16. Das erste verbum fin. behält den Ton nach P. 8, 1, 58. 59. Whitney in J. Am. Or. Soc. V, 401. अयमस्मान्वनस्पतिर्मा च क्वा ना च रिरिषत् RV. 3, 53, 20. नमस्यतीरुप च यत्ति सं चा च विशति 9, 93. 3. — b) wird an erster Stelle weggelassen: पुंसं कृविशं RV. 1, 12, 10. अमृतं मर्त्यं च 33, 2. 7, 4. 10, 5. 13, 1. 14, 1. 17, 6. 25, 11. 31, 9. तेजसा यशसा लक्ष्म्या स्थित्या च पर्या N. 12, 6. 1, 9, 10. Hit. I, 33. पाठवं संस्कृतोक्तिषु । वाचां सर्वत्र वैचित्र्यं नीतिविद्या ददाति च (gehört zu नीतिः) ॥ Hit. Pr. 2. निपेतुस्ते गुरुतमः सा दर्श च तान्गणान् N. 1, 22. 2, 15. दासानां भुजवेगेन नद्याः क्षेतिजलेन च । वायुना चानुकूलेन Hip. 1, 2. न — न *weder — noch* N. 10, 21. — c) steht nur an erster Stelle: इन्द्रश्च वायो RV. 4, 47, 2. इन्द्रश्च सोम 7, 104, 25. 4, 30, 10. अग्निश्च सोम 1, 93, 5. इह चामुत्र M. 9, 322. प्रेत्य चेह 3, 20. दुर्भेद्यश्चाग्निसंघेयः Hit. I, 86. न खलु च परिभोक्तुं नैव शक्नोमि कृतुम् *weder — noch* Çak. 113. — d) bei mehreren zu verbindenden Wörtern unregelmässig gesetzt: मधुपर्के च यज्ञे च पितृदेवतकर्मणि (fehlt zuletzt) M. 5, 41. कर्षो चर्म च बालाश्च वस्तिं स्नायुं च रोचनाम् 8, 234. ऋणादाता च वैद्यश्च श्रोत्रियः मुञ्जला नदी ad Hit. I, 100. Pr. 26. N. 12, 5. — e) mit Weglassung desjenigen Wortes oder derje-

nigen Wörter, an welche angeknüpft wird: कमाडलौ च कारकः *hat* (unter andern) *auch* die Bedeutung von क° AK. 3, 4, 1, 6. 15 u. s. w. — f) bisweilen müssig: ईजे चाप्यश्मेधेन ययातिरिव नाहुषः । अन्यैश्च बहुभिर्धमिन्क्रतुभिश्चाप्तदन्तिणैः ॥ N. 5, 43. — g) in Verbind. mit anderen Partikeln: चैव (in M. wohl 300 Mal): वैरिणं नोपसेवेत सहायं चैव वैरिणः *weder — noch* M. 4, 133. चैव — चैव N. 22, 29. Brähman. 2, 25. चैव — च N. 4, 2. 20. Brähman. 2, 25. च — चैव N. 5, 16. चैव हि (am Ende eines Halbverses) M. 2, 105. 3, 116. 207. 232. 4, 25. चापि M. 1, 14. 3, 179. च — चापि N. 10, 16. R. 1, 4, 8. चापि — च N. 5, 45. अपि च (vgl. u. अपि 2.), न — न — अपि च (ohne Neg.) N. 1, 13. सख्यं प्रीतिं चापि न कारयेत् *weder — noch* Hit. I, 74. न — न चापि Hit. I, 13. अपि चैव M. 1, 105. चैवापि 4, 6. 8, 128. च तथा 6, 62. Indr. 1, 6. तथा च N. 4, 8. तथैव च M. 7, 150. 153. 8, 291. 292. 9, 291. R. 1, 3, 13. — 2) wechselt mit वा *oder* und vertritt dessen Stelle: इह चामुत्र वा M. 12, 89. स्त्री वा पुमान्वा यज्ञान्यत्सहं नगराष्ट्रजम् R. 1, 9, 21. न ते भयं नरव्याघ्र दंष्ट्रियः शत्रुतो ऽपि वा । ब्रह्मर्षिभ्यश्च भविता N. 14, 18. अस्वार्णस्य देवी तमृताहो ऽस्य मरुभूतः । अस्याश्च नद्याः 12, 53. — 3) *auch, selbst, sogar:* कस्य विभ्यति देवाश्च R. 1, 1, 4. सुचितितं चौषधमातुराणां न नाममात्रेण करोत्येरागम् Hit. I, 162. यानि कानि च मित्राणि कर्तव्याणि शतानि च ad 17, 3. Çak. 6, 5. रुक्मिता भर्तृभिश्चैव न कुध्यति कदा च न N. 18, 9. — 4) *und zwar:* ध्रुवमत्र जलस्थानं मरुच्चेति मतिर्मम Hip. 1, 26. अग्निष्यामो वयं तं च न च दोषो भविष्यति R. 1, 8, 21. — 5) = *ev gerade, eben:* ते तु यावत् एवजो तावाश्च ददणे स तैः Ragh. 12, 45. Vgl. den Sch. zu P. 2, 1, 17. 72, der das च bei P. so auffasst. — 6) verbindet Gegensätze, α) *aber, dagegen:* मूर्खो ऽपि शोभते तावत्सभायां वस्त्रवेष्टितः । तावच्च शोभते मूर्खो यावत्किंचिन्न भाषते ॥ Hit. Pr. 39. I, 33. 50. कलिना तत्कृतं कर्म त्वं च मूढ न बुध्यसे N. 26, 21. पिता यस्य तु वृत्तः स्याज्जीवेच्चापि पितामहः M. 3, 221. यदि च N. 9, 35. अथ च v. l. für अथ तु Çak. 123. अथ वा च MBu. 12, 7328. वरमाद्यौ न चात्तिमः Hit. Pr. 12. 16. N. 3, 16. — β) *dennoch:* शातमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः Çak. 15. कामात्मता न प्रशस्ता न चैवेकास्त्यकामता M. 2, 2. अपनेतुं च यत्तिता न चैव शाकितो मया Hip. 4, 33. प्रजाकामः स चाप्रजः N. 1, 5. 28. 9, 4. 21, 29. R. 1, 1. 36. Vid. 23. — 7) च — च